९. दक्षिण भारत के प्राचीन राज्य

९.१ चेर, पांड्‍य और चोल राजवंश
९.२ सातवाहन राजवंश
९.३ वाकाटक राजवंश
९.४ चालुक्य राजवंश
९.५ पल्लव राजवंश
९.६ राष्ट्रकूट राजवंश

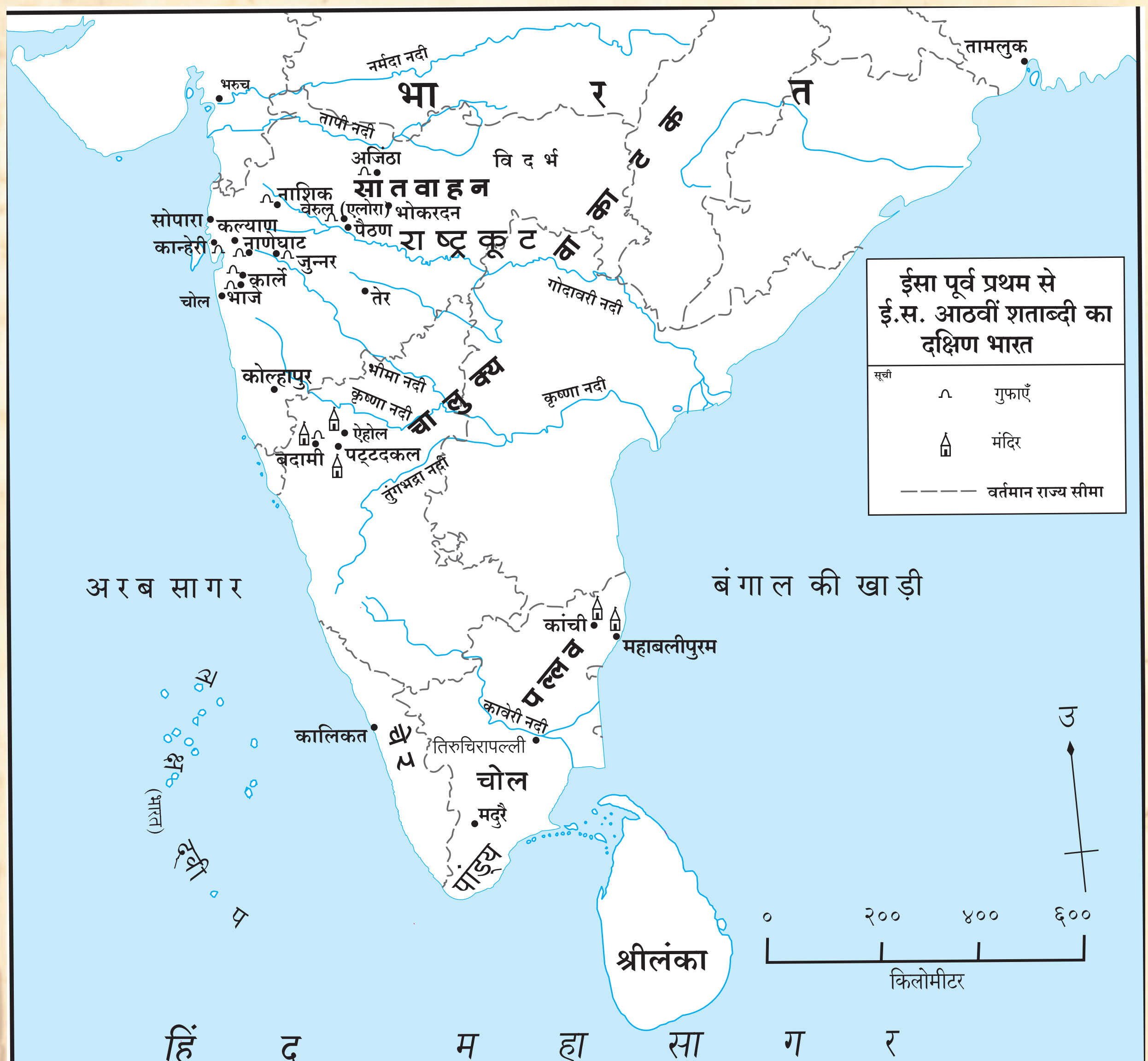

करके देखो ।

भारत के मानचित्र प्रारूप में दक्षिण भारत के महत्वपूर्ण स्थानों को दर्शाओ ।

९.१ चेर, पांड्‍य और चोल राजवंश

दक्षिण की प्राचीन राजसत्ताओं में तीन राजसत्ताओं का उल्लेख तत्कालीन साहित्य में आता है । चेर, पांड्‍य

और चोल ये वे राजसत्ताएँ हैं । ये राजसत्ताएँ ईसा पूर्व चौथी शताब्दी अथवा उसके पहले से ही अस्तित्व में थीं । उनका उल्लेख रामायण, महाभारत महाकाव्यों में किया गया है । तमिल भाषा के संघम (संगम) साहित्य में इन तीन राजसत्ताओं का उल्लेख मिलता है । मौर्य सम्राट अशोक के लेखों में भी उनका उल्लेख प्राप्त होता है । 'पेरिप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी' पुस्तक में 'मुजिरीस'(मुजिरिम) बंदरगाह का उल्लेख मिलता है और इस बंदरगाह को केरल तट का अत्यंत महत्त्वपूर्ण बंदरगाह बताया गया है । यह बंदरगाह चेर राज्य में था । मुजिरीस (मुजिरिम) बंदरगाह से मसाले के पदार्थ, मोती, मूल्यवान रत्न आदि वस्तुओं का इटली के रोम और पश्चिम के अन्य देशों में निर्यात होता था । पांड्य राज्य का विस्तार वर्तमान तमिलनाडु में था । वहाँ के उत्कृष्ट श्रेणी के मोतियों की बहुत माँग थी । मदुरै पांड्य राज्य की राजधानी थी । प्राचीन चोलों का राज्य तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली के आस-पास के प्रदेश में था ।

९.२ सातवाहन राजवंश

मौर्य साम्राज्य का ह्रास होने के पश्चात उत्तर भारत की भाँति महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक राज्यों के स्थानीय राजा स्वतंत्र बने । उन्होंने छोटे-छोटे राज्य स्थापित किए । उनमें से एक सातवाहन राजवंश था । प्रतिष्ठान अर्थात पैठण उनकी राजधानी थी । राजा सिमुक सातवाहन राजवंश का संस्थापक था । पुणे जिले के जुन्नर के समीप नाणेघाट की गुफाएँ हैं । इन गुफाओं में उकेरे गए लेखों में इस राजवंश के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के नाम पाए जाते हैं । कुछ सातवाहन राजा अपने नाम से पहले माता का नाम लगाते थे । जैसे- गौतमीपुत्र सातकर्णी ।

सातवाहन राजवंश में गौतमीपुत्र सातकर्णी राजा विशेष ख्यातिप्राप्त है । उसके पराक्रम का वर्णन नाशिक की गुफाओं में उकेरे हुए लेखों में किया गया है । उसने शक राजा नहपान को पराजित किया था ।

क्या तुम जानते हो ?

नाणेघाट : पुणे और ठाणे जिले की सीमा पर (जुन्नर-मुरबाड़ मार्ग)घाट है । यह घाट 'नाणेघाट' नाम से जानी जाती है । इस घाट सड़क की दूरी पाँच किलोमीटर है और लगभग दो हजार वर्ष पूर्व सातवाहनों के कार्यकाल में बनाई गई है। पहले यह घाट देश (महाराष्ट्र का पठारी क्षेत्र) और कोकण के बीच प्रमुख व्यापारी मार्गों में से एक थी । इस घाट की सड़क का उपयोग व्यापार एवं यातायात के लिए किया जाता था । उकेरा हुआ बड़ा घड़ा आज भी वहाँ देखने को मिलता है । नाणेघाट की गुफाओं में सातवाहन राजाओं की मूर्तियाँ और शिलालेख पाए जाते हैं तथा इन शिलालेखों में सातवाहन राजाओं एवं रानियों द्‌वारा दिए गए दानों और चंदों का वर्णन मिलता है ।

नाशिक के लेख में गौतमीपुत्र का उल्लेख 'त्रिसमुद्रतोयपीतवाहन' के रूप में किया गया है । तोय का अर्थ जल है । घोड़े राजा के वाहन हैं । ऊपरी पदवी का अर्थ यह होता है - 'जिसके घोड़ों ने तीनों समुद्रों का पानी पिया है । तीन समुद्रों से तात्पर्य अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर हैं । उसके कार्यकाल में सातवाहनों का साम्राज्य उत्तर में नर्मदा नदी से दक्षिण में तुंगभद्रा नदी तक फैला हुआ था ।

हाल नाम के सातवाहन राजा का 'गाथासप्तशती' ग्रंथ प्रसिद्‌ध है । यह ग्रंथ प्राकृत भाषा माहाराष्ट्री में रचित है । इस ग्रंथ में सातवाहनों के समय के जनजीवन की जानकारी मिलती है ।

सातवाहन कालखंड में भारत के व्यापार में बहुत वृद्‌धि हुई । महाराष्ट्र के पैठण, तेर, भोकरदन, कोल्हापुर को व्यापारिक केंद्र के रूप में विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ । इस कालखंड में वहाँ असंख्य कला वस्तुओं का उत्पादन होने लगा । भारतीय माल का निर्यात रोम तक होता था । कुछ सातवाहन सिक्कों पर जहाजों की

प्रतिमाएँ अंकित हैं । महाराष्ट्र के अजिंठा (अजंता), नाशिक,कार्ले, भाजे, कान्हेरी, जुन्नर की गुफाओं में से कुछ गुफाओं का खनन सातवाहन के समय में किया गया है ।

जहाज की प्रतिमा अंकित सातवाहन का सिक्का

कार्ले का चैत्यगृह

९.३ वाकाटक राजवंश

ई. स. की तीसरी शताब्दी के प्रारंभ में सातवाहनों की सत्ता क्षीण हो गई । सातवाहनों के बाद जिन राजसत्ताओं का उदय हुआ; उनमें वाकाटक सामर्थ्यशाली राजवंश था । वाकाटक राजवंश के संस्थापक का नाम 'विंध्यशक्ति' था । विंध्यशक्ति के बाद प्रवरसेन प्रथम राजा बना । प्रवरसेन के बाद वाकाटकों का राज्य बँट गया । उनमें दो शाखाएँ प्रमुख थीं । प्रथम शाखा की राजधानी नंदीवर्धन (नागपुर के समीप) थी । दूसरी शाखा की राजधानी वत्सगुल्म अर्थात वर्तमान वाशिम (वाशिम जिला) थी । विंध्यशक्ति के बेटे-प्रवरसेन प्रथम ने वाकाटक साम्राज्य का विस्तार किया । उसके कार्यकाल में वाकाटकों का साम्राज्य उत्तर में मालवा और गुजरात प्रदेश से लेकर दक्षिण में कोल्हापुर तक फैला हुआ था । उस समय कोल्हापुर का नाम 'कुंतल' था । गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय की बेटी प्रभावती का विवाह वाकाटक राजा रुद्रसेन से हुआ था; यह जानकारी हमने इससे पूर्व प्राप्त की है । वाकाटक राजा हरिषेण का वराहदेव नामक मंत्री था । वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था । अजिंठा गुफाओं में १६ क्रमांक की

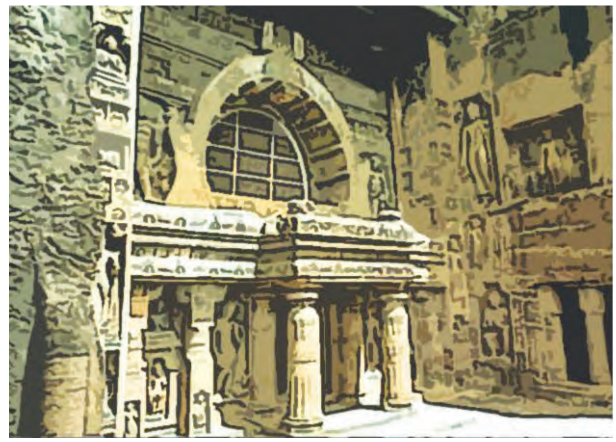

अजिंठा (अजंता) की एक गुफा

गुफा का खनन उसने करवाया था । अजिंठा की अन्य कुछ गुफाओं में खुदाई तथा उन गुफाओं के चित्रों से सुशोभित करने का कार्य हरिषेण के कार्यकाल में हुआ । वाकाटक राजा प्रवरसेन द्वितीय ने प्राकृत

अजिंठा (अजंता) में बोधिसत्त्व पद्मपाणि

भाषा 'माहाराष्ट्री' में 'सेतुबंध' ग्रंथ की रचना की। इसी भाँति कालिदास द्‌वारा रचित 'मेघदूत' काव्य भी इसी कालखंड की रचना है ।

९.४ चालुक्य राजवंश

कर्नाटक के चालुक्य राजवंश की सत्ता बलशाली थी । वाकाटकों के बाद प्रबल हुई राजसत्ताओं में कदंब, कलचुरी आदि सत्ताओं का समावेश था । परंतु इन सभी पर चालुक्य राजाओं ने वर्चस्व प्रस्थापित किया । ई. स. की छठी शताब्दी में पुलकेशिन (पुलकेशी) प्रथम ने चालुक्य राजवंश की स्थापना की । कर्नाटक में बदामी उसकी राजधानी थी । बदामी का प्राचीन नाम 'वातापि' था । चालुक्य राजा पुलकेशिन (पुलकेशी) द्‌वितीय ने सम्राट हर्षवर्धन के आक्रमण को विफल बनाया था । बदामी, ऐहोले, पट्‌टदकल में प्रसिद्‌ध मंदिरों का निर्माण चालुक्य राजाओं के कार्यकाल में किया गया ।

पट्‌टदकल का मंदिर

९.५ पल्लव राजवंश

पल्लव राजसत्ता दक्षिण भारत की एक सशक्त राजसत्ता थी । तमिलनाडु की कांचीपुरम नगरी उनकी राजधानी

महाबलिपुरम का रथ मंदिर

थी । महेंद्र वर्मन एक पराक्रमी पल्लव राजा था । उसने पल्लव राज्य का विस्तार किया । वह स्वयं नाटककार था । महेंद्र वर्मन के बेटे नरसिंह वर्मन ने चालुक्य राजा पुलकेशिन (पुलकेशी) द्‍वितीय के आक्रमण को विफल कर दिया था । उसके कार्यकाल में महाबलिपुरम में प्रसिद्‍ध रथ मंदिरों की खुदाई की गई । ये रथ मंदिर अखंड पत्थर में खोदे गए हैं ।

पल्लव राजाओं की जलसेना शक्तिशाली और सुसज्ज थी । उनके कार्यकाल में भारत का दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ निकट के संबंध स्थापित हुए । देश का भीतरी और बाहरी व्यापार समृद्‍ध हुआ । युआन श्वांग कांची में आया था । उसने कहा है,''पल्लव राजाओं के राज्य में सभी धर्मों के लोगों के साथ सहिष्णुता और न्याय का व्यवहार किया जाता है ।''

९.६ राष्ट्रकूट राजवंश

राष्ट्रकूट राजवंश के संपन्न कालखंड में उनकी सत्ता विंध्य पर्वत से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैली हुई थी । दंतिदुर्ग राजा ने राष्ट्रकूटों की सत्ता पहले महाराष्ट्र में स्थापित की । राजा कृष्ण प्रथम ने वेरुल (एलोरा) के प्रख्यात कैलाश मंदिर की खुदाई करवाई ।

अब तक हमने मुख्य रूप से प्राचीन भारत की विभिन्न राजनीतिक सत्ताओं की जानकारी प्राप्त की । अगले पाठ में प्राचीन भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

वेरुल (एलोरा) की कैलास गुफा

क्या तुम जानते हो ?

पेरिप्लस ऑफ दी एरिथ्रियन सी :

पेरिप्लस का अर्थ जानकारी पुस्तिका है । एरिथ्रियन सी का अर्थ लाल सागर है । यूनानी लोगों के अनुसार हिंद महासागर और ईरान की खाड़ी लाल सागर के हिस्से थे । 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' का अर्थ 'लाल सागर की जानकारी पुस्तिका' है । यह पुस्तिका लगभग ई. स. प्रथम शताब्दी की है । इस पुस्तिका का लेखक एक नाविक है तथा वह इजिप्तवासी है । भारत का समुद्रीतट, ईरान की खाड़ी और इजिप्त के बीच चलने वाले व्यापार की जानकारी पेरिप्लस में मिलती है । बैरिगाजा से तात्पर्य भरूच, नाला-सोपारा, कल्याण, मुजिरीस (मुजिरिम) आदि भारतीय बंदरगाहों का उल्लेख पेरिप्लस में है । मुजिरीस (मुजिरिम) केरल के कोचीन के समीप स्थित प्राचीन बंदरगाह था । आज उसका अस्तित्व नहीं है ।

स्वाध्याय

१. **पहचानो तो ।**

(१) सातवाहन राजा अपने नाम से पहले किसका नाम लगाते थे...............

(२) प्राचीन समय में कोल्हापुर का नाम........

२. **पाठ में दिए गए मानचित्र का निरीक्षण करो और निम्न तालिका पूर्ण करो :**

पल्लव	कांची
----	ऐहोल, बदामी, पट्टदकल
सातवाहन	----

३. **निम्न राजसत्ताएँ और राजधानी का वर्गीकरण करो । सातवाहन, पांड्य, चालुक्य, वाकाटक, पल्लव, मदुरै, प्रतिष्ठान, कांचीपुरम, वातापि**

अ. क्र.	राजसत्ता	राजधानी
१.		
२.		
३.		
४.		

४. **पाठ में दिए गए किन्हीं तीन चित्रों का निरीक्षण करो और अपने शब्दों में लिखो कि तुम्हें क्या जानकारी प्राप्त होती है ।**

५. **निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :**

(१) दक्षिण की प्राचीन राजसत्ताएँ कौन-कौन-सी थीं ?

(२) मौर्य साम्राज्य का ह्रास होने के बाद किस प्रदेश के स्थानीय राजा स्वतंत्र बने ?

६. **संक्षेप में उत्तर लिखो :**

(१) महेंद्र वर्मन का कार्य लिखो ।

(२) 'त्रिसमुद्रतोयपीतवाहन' का अर्थ क्या है ? स्पष्ट करो ।

(३) मुजिरीस (मुजिरिम) बंदरगाह से किन वस्तुओं का निर्यात होता था ?

उपक्रम :

पाठ में दिए गए चित्रों का संग्रह करके उनकी जानकारी प्राप्त करो और विद्यालय की प्रदर्शनी में रखो ।

* * *

6YXU56